

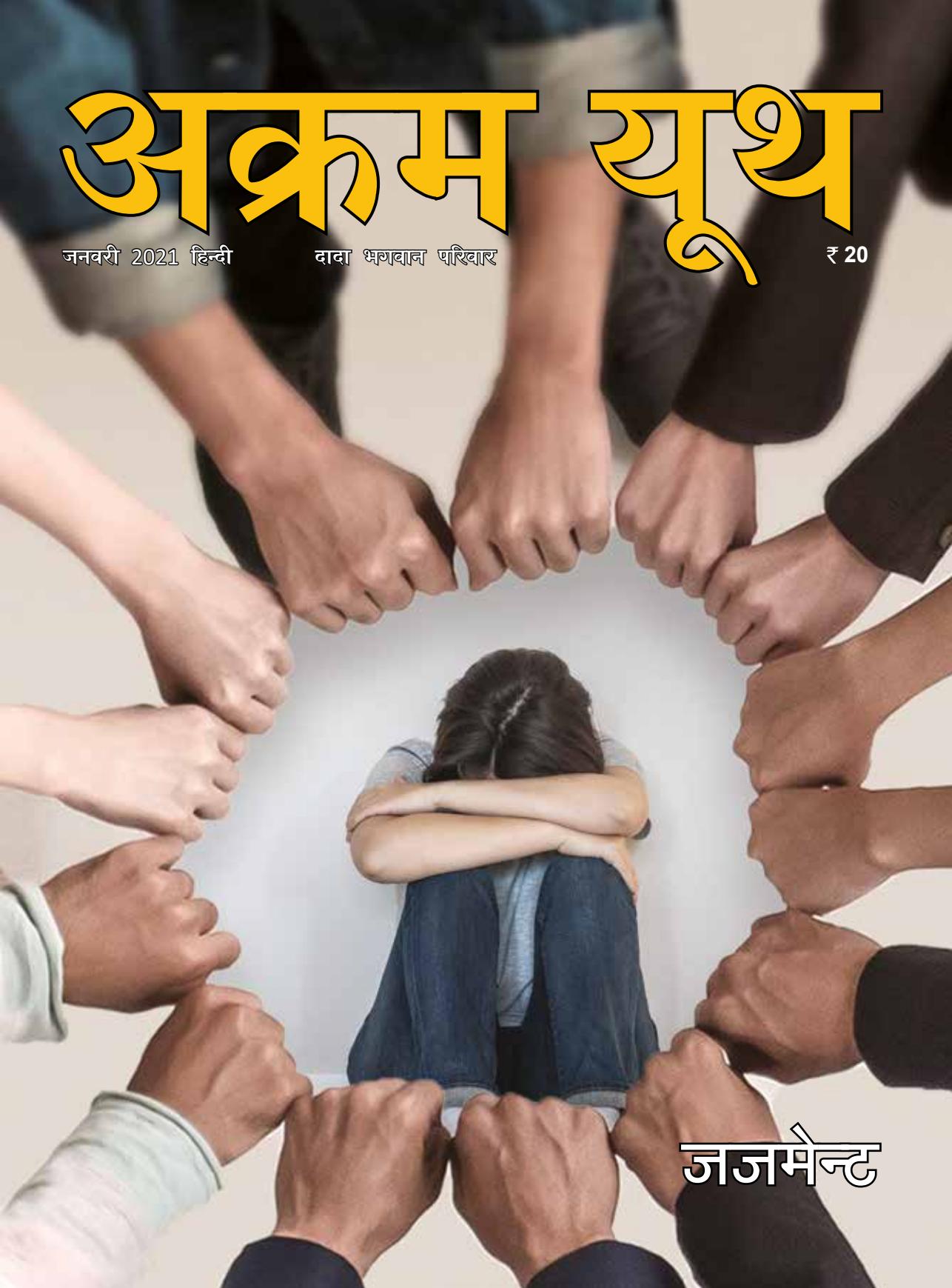
अन्तर्राष्ट्रीय युथ

जनवरी 2021 हिन्दी

दादा भगवान् परिवार

₹ 20

जजमेन्ट



अनुक्रमणिका

04 जजमेन्ट यानी क्या?

05 जजमेन्ट का असर

08 जजमेन्ट किस आधार पर देते हैं?

10 Q and A

12 यानी पुरुष दादा भगवान को भी लोगों ने जज किया था।

14 यानी आश्वर्य की प्रतिमा

15 अक्रम पीडिया

18 यानी विद्यूथ

20 महान पुरुषों की झाँकियां

21 #कविता

22 एडजस्टमेन्ट ऑन जजमेन्ट

जनवरी 2021

वर्ष : 8, अंक : 9

अखंड क्रमांक : 93

संपर्क सूत्र :

ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिठी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात
फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org
store.dadabhagwan.org/akram-youth

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at : Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gndhinagar

Printed at : Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025. Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription

Yearly Subscription

India : 200 Rupees

USA: 15 Dollars

UK: 12 Pounds

5 Years Subscription

India : 800 Rupees

USA: 60 Dollars

UK: 50 Pounds

In India, D.D. / M.O. should be drawn
in favour of "Mahavideh Foundation"
payable at Ahmedabad.

© 2021, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved



सुंपादकीय—

मेरा कैसा दिखेगा?

प्रिय मित्रों,

बचपन में आप सभी ने सात पूँछ वाले चूहे की कहानी तो सुनी ही होगी। सात पूँछ की वजह से लोग उसे चिढ़ाते थे इसलिए उसने पूँछ कटवाने की शुरुआत की। आखिरकार सारी पूँछे कटवाने के बाद भी लोग उसे 'बिना पूँछ वाला चूहा', 'बिना पूँछ वाला चूहा' कह कर चिढ़ाने लगे।

दोस्तों, क्या आप भी अपने कपड़ों को लेकर, खाने-पीने को लेकर, पढ़ाई या किसी भी छोटे-मोटे काम को लेकर ऐसा सोचते हैं कि मेरी क्या छाप पड़ेगी? लोग मेरे बारे में क्या सोचेंगे? दूसरों द्वारा की गई टिप्पणी या सूचनाओं को पॉज़िटिव तौर पर लेने के बजाय अगर आपको उनके प्रति द्वेष हो जाता है तो आपको सोचने की ज़रूरत है कि कहीं आप भी हमारी कहानी के चूहे की तरह तो नहीं बनने जा रहे?

औरों के अभिपायों का ज़रूरत से ज्यादा दबाव से हमारे मन और शरीर पर नकारात्मक असर हुए बिना नहीं रहेगा। लेकिन घबराइए मत, आपके प्रिय अक्रम यूथ में इस महीने हम इसी विषय पर चर्चा करेंगे। आपको भी जीवन में कभी ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़े तो उसके लिए कैसी समझ होनी चाहिए उसकी चाबियाँ प्राप्त करने के लिए यह अंक अवश्य पढ़ना ही पड़ेगा.... तैयार हैं न????

- डिम्पल महेता

जजमेन्ट यानी क्या?

जजमेन्ट यानी किसी व्यक्ति के प्रति अभिप्राय बांध लेना और उसे ठेक से पहचाने बगैर ही उसके बारे में कमेन्ट्स करना। यदि कमेन्ट पोज़िटिव हो तो उसे प्रशंसा कहते हैं और नेगेटिव हो तो उसे जजमेन्ट कहते हैं।

स्वभाव से ही मनुष्य आसपास के संयोगों के कारण एक-दूसरे को और खुद को जज करता है। अपनी योग्यता साबित करने के लिए हम दूसरों को जज करते हैं। यों देखा-देखी या पिअर प्रेशर के

कारण यह सिलसिला चलता रहता है, मानो उसी के आधार पर ही हमारा अस्तित्व है!

जजमेन्ट देना हमारे स्वभाव में ऐसा गुथा हुआ है कि उसे पूरी तरह से खत्म नहीं किया जा सकता। लेकिन लोगों द्वारा दिए गए जजमेन्ट के कारण हम पर जो असर होता है उसे कम ज़रुर कर सकते हैं। हाँ, आज हम इसी के बारे में बात करने वाले हैं कि नेगेटिव जजमेन्ट का सामना किस तरह किया जाए?

क्या आपने कभी ऐसे कमेन्ट्स सुने हैं? जैसे कि...

तू बहुत मोठा है या बहुत पतला है।

तू बहुत बोरिंग है।

वह बहुत गरीब है, हमारे स्टेट्स से मैच नहीं होगा।

तुझे अंग्रेजी बोलना नहीं आता!

वह स्पोर्ट्स में हिस्सा नहीं ले पाएगा, वगैरह...

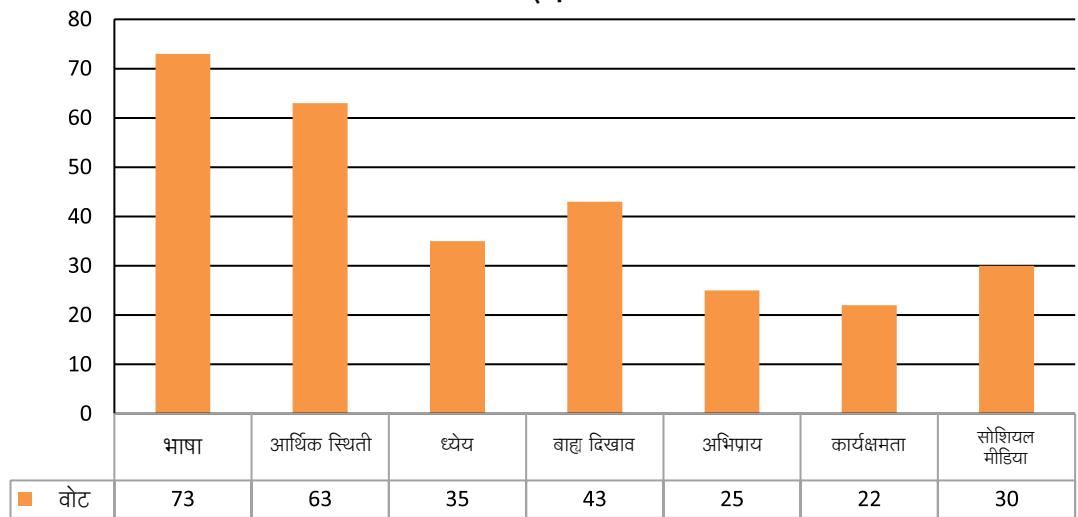


जजमेन्ट का असर

देशभर के 13 से 25 वर्ष की उम्र के लगभग 220 युवा - 120 लड़के और 100 लड़कियों पर एक सर्वे किया गया, जिसमें उन्हें ऐसे टॉप पाँच कारण बताने थे, जिनके आधार पर वे दूसरों को और दूसरे उन्हें जज करते हैं। सर्वे का परिणाम इस प्रकार रहा।

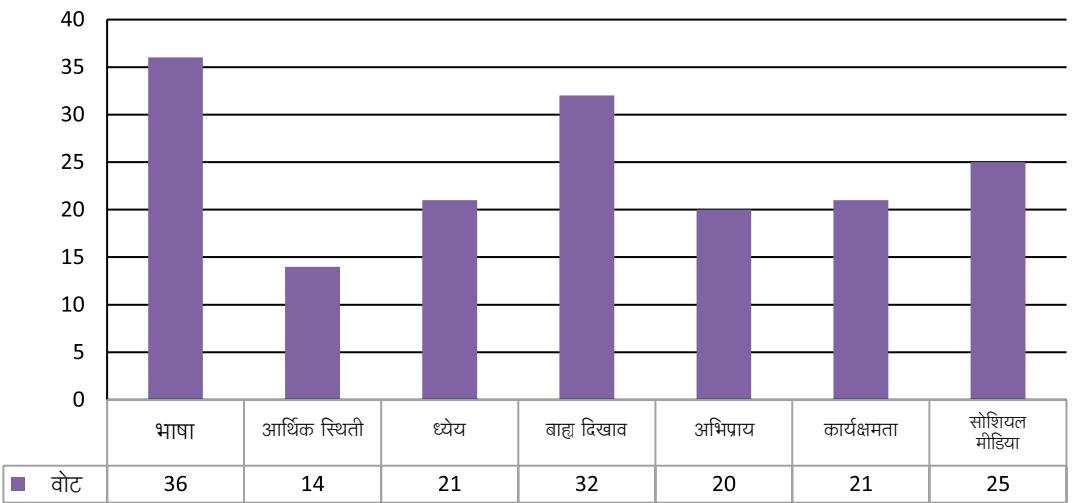


बॉइंज़



बॉइंज़ का कहना है कि ज्यादातर लोग उन्हें भाषा, आर्थिक परिस्थिति और बाहु दिखावे के आधार पर जज करते हैं।

गल्स



गल्स का कहना है कि ज्यादातर लोग उन्हें भाषा, सोशल मीडिया और बाहु दिखावे के आधार पर जज करते हैं।



satsang.dadabhagwan.org

The homepage features a top navigation bar with links for SCHEDULE, BOOKS, VIDEOS, GALLERY, MUSIC, CONCERT, WALLPAPERS, and DOWNLOADS. A central banner displays a quote by Dada Bhagwan: "MAY THE WORLD ATTAIN THE HAPPINESS THAT I HAVE ATTAINED" with a photo of him. Below this is a section for "Today's Energizer" with three cards. A "Recent Satsang" section shows four video thumbnails for Morning Satsang sessions. A "Upcoming Events" section lists a "Sat Sang and Gnanividhi in Mumbai" on 09 Feb at Satlok Ashram.

A large image of Dada Bhagwan smiling is on the right. The "Upcoming Events" section details a "Sat Sang and Gnanividhi in Mumbai" on 09 Feb at Satlok Ashram.

A "Quote of the Day" section features a quote in English: "The world is a mirror; you are it; it reflects what you are." Below it is a photo of Dada Bhagwan.

A "Latest Magazine" section shows three issues: "Dadavani of the Month" (February 2019), "Akram Express of the Month" (February 2019), and "Akram Youth of the Month" (January 2019).

A "Wallpaper of the Month" section shows three images of Dada Bhagwan.



Dadabhagwan app

A large image of Dada Bhagwan with his hands joined in a namaste. Below him is the text "Dada Bhagwan" in pink and "Spirituality at your fingertips..." in a smaller font. The Satsang logo is at the bottom.

GET IT ON
Google Play

Download on the
App Store

जनवरी 2021

जजमेन्ट किस आधार पर देते हैं?

कोई हमें जज करे तो उसका हम
पर कैसा असर पड़ता है?



उस व्यक्ति की हाजिरी हमें
अच्छी नहीं लगती।



उनके प्रति नेगेटिव विचार
आने लगते हैं।



अपना अच्छा दिखाने के लिए हम उनके
कहे अनुसार करने लगते हैं।



उस व्यक्ति के बारे में अफवाँ
फैलाने लगते हैं।



उनके प्रति अभिप्राय
द्रढ़ हो जाते हैं।



हम दुःखी हो जाते हैं और उसे लेकर खुद
को कोसने लगते हैं।



हमें जजमेन्ट्स का और लोगों
का डर लगने लगता है।



अपने आप पर शंका होने लगती हैं और
परिणामस्वरूप आत्मविश्वास खो बैठते हैं।



जज करने वाले को इgnor करते हैं, उन पर गुस्सा
करते हैं या उनके बारे में निंदा करने लगते हैं।



अपने ध्येय से दूर हो जाते हैं।



प्रश्नकर्ता : रोज़मर्ग के जीवन में ऑफिस या कॉलेज में लोग हमें हमारे दिखावे, कपड़े या लाइफस्टाइल के आधार पर जज करते हैं और कमेन्ट करते हैं।

आप्सपुत्र : इसमें ऐसा है कि आप जिन लोगों के साथ रहते हो वे जज तो करेंगे ही, लेकिन आप पर उनके जजमेन्ट का असर नहीं होने देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन असर तो हो ही जाता है। जैसे कि ट्रेन्डी कपड़े नहीं पहनने हों लेकिन फिर भी असर के कारण और उनके साथ रहने के लिए पहनने ही पड़ते हैं।

आप्सपुत्र : यदि आप उनकी नकल करने लगोगे तो आपका खुद का 'स्टैन्ड' क्या रहा? लोगों की बातों का इतना ज्यादा असर हो जाता है! क्या आपको पता है कि गाँधीजी ने सूट-बूट छोड़कर धोती पहनना क्यों तय किया?

प्रश्नकर्ता : हाँ, उन्होंने देखा कि मेरे देश के लोगों को तन ढकने के लिए पूरा कपड़ा नहीं मिलता और वे बहुत गरीबी में जी रहे हैं।

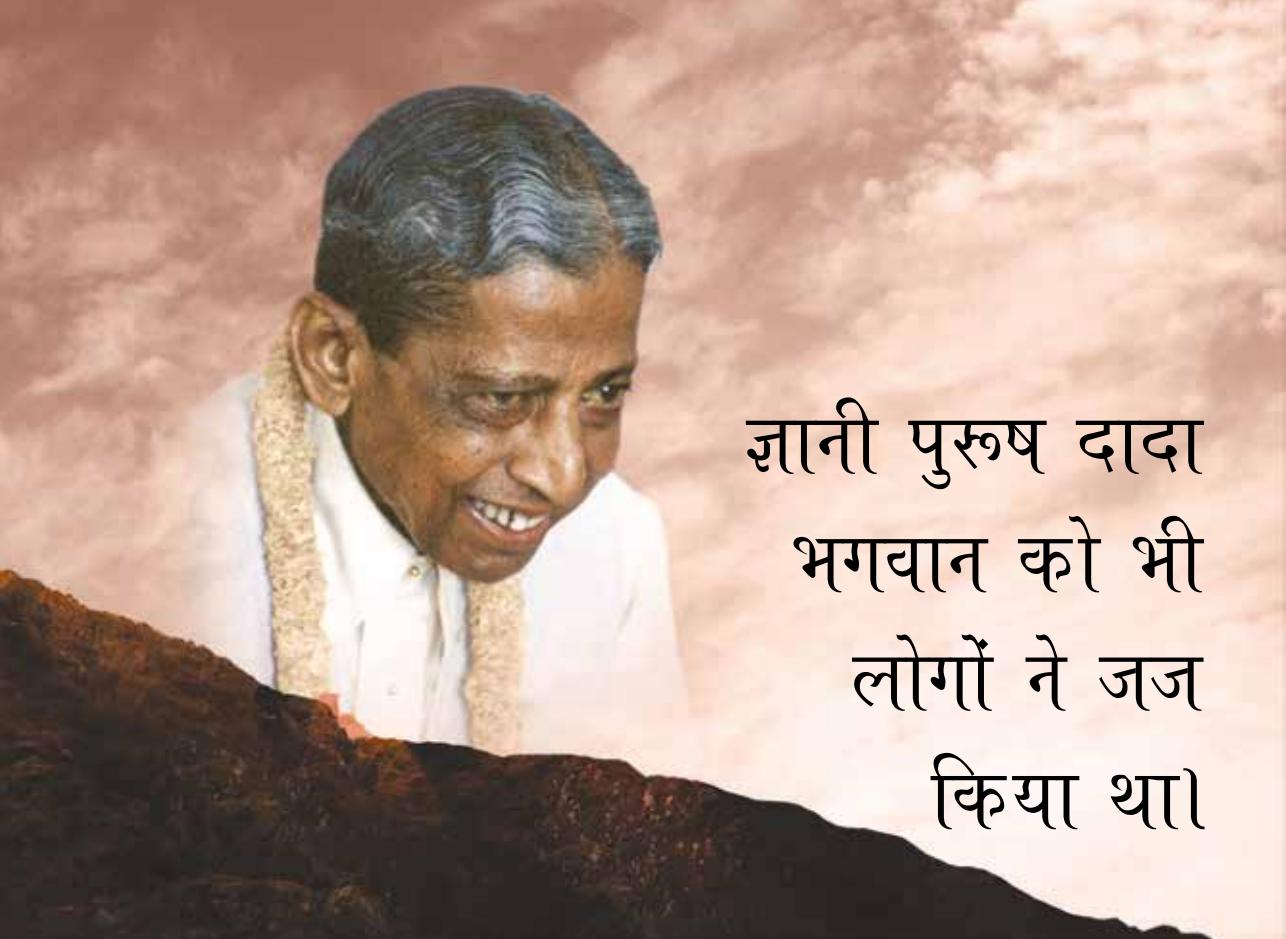
आप्सपुत्र : हं..... और धोती पहनकर ही राजा से मिलने इंगलैन्ड जाने में भी हिचकिचाए नहीं। लोगों ने उन्हें भी सलाह-मशवरा दिया, उनकी हँसी उड़ाई फिर भी वे मज़बूती से अपने

निर्णय पर टिके रहे। लेकिन हम अपना किया हुआ निर्णय छोड़ देते हैं क्योंकि हम पर लोगों के कमेन्ट्स का असर हो जाता है और हम अपने ध्येय और पहचान को भी खो देते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन फिर हमारी 'लाइफस्टाइल' उनकी 'लाइफस्टाइल' से मैच नहीं होगी।

आपसुत्र : 'लाइफस्टाइल' यदि मैच न हो तो हमें अपने आप को बदलने की ज़रूरत नहीं है, आपका आत्मविश्वास देखकर वे लोग आप से सिखेंगे! ये जो महान लोग हैं और जो ऊँचे पद पर हैं, उन्होंने ऐसी बातों में समय बिगाड़ा ही नहीं है और अपने ध्येय को पकड़कर आगे बढ़े हैं।





ज्ञानी पुरुष दादा भगवान् को भी लोगों ने जज किया था।

हुआ ऐसा कि दादा बड़ौदा में थे और सत्संग चल रहा था। एक 25 साल का युवक आ कर पीछे बैठ गया। दादा ने खुद उस लड़के को बुलाकर आगे बिठाया। बात-चीत शुरू हुई।

दादाश्री : आप दादा की कोई किताब, साहित्य पढ़े हो क्या?

युवक : हाँ, पढ़ा हूँ।

दादाश्री : कौन सी?

युवक : यह आपकी 'आफतवाणी'

महात्माओं को बुरा लगा। लेकिन दादा तो बिल्कुल सहज बैठे थे। दादा को एक भी नेगेटिव विचार नहीं आया, सरलता से दादा ने उससे पूछा,

दादाश्री : ऐसा? अच्छा, क्या किया?

युवक : कुछ नहीं, सभी किताबें ऐसे ही रखी हैं।

दादाश्री : ऐसा करना, कुछ वापस दे जाना, अगर तुझे नहीं पढ़नी हो तो।

युवक : हाँ, दे दूँगा।

(फिर दादा किसी और के साथ सत्संग करने लगे तो वह युवक बीच में से ही उँकर जाने लगा।)

दादाश्री : अरे, कहाँ चले? बैठे!

युवक : मैं घर जा रहा हूँ, मुझे नहीं बैठना।

दादाश्री : यों ही चला जाएगा, ऐसे थोड़ी चलेगा।

युवक : मजा नहीं आ रहा है, मैं जा रहा हूँ।

दादाश्री : “ठीक है.... जा! लेकिन यों ही नहीं, चाय पीकर जा।”

युवक : मैं चाय नहीं पीता।

दादाश्री : दूध पीकर जा।

(किचन में महात्मा से)

दादाश्री : इसके लिए ज़रा केसर, बादाम-पीस्तौ वाला दूध ले आना।

युवक : मुझे नहीं पीना।

दादाश्री : ऐसा नहीं चलेगा, बगैर पीए तो जाने नहीं देंगे।

(बहस चली, तब तक पाँच मिनट में दूध आ गया)

दादाश्री : तुझे पीना पड़ेगा।

युवक : नहीं!

दादाश्री : ऐसे नहीं चलेगा, अगर तू मना करेगा तो ये सब लोग तेरे हाथ-पैर पकड़कर तेरे मूँह में दूध उड़ेल देंगे। प्रेम से पिलाया हुआ दूध पी कर तो देख, हमारा प्रेम है।

युवक : हाँ, लेकिन मैं इतना सारा नहीं पिँँगा।

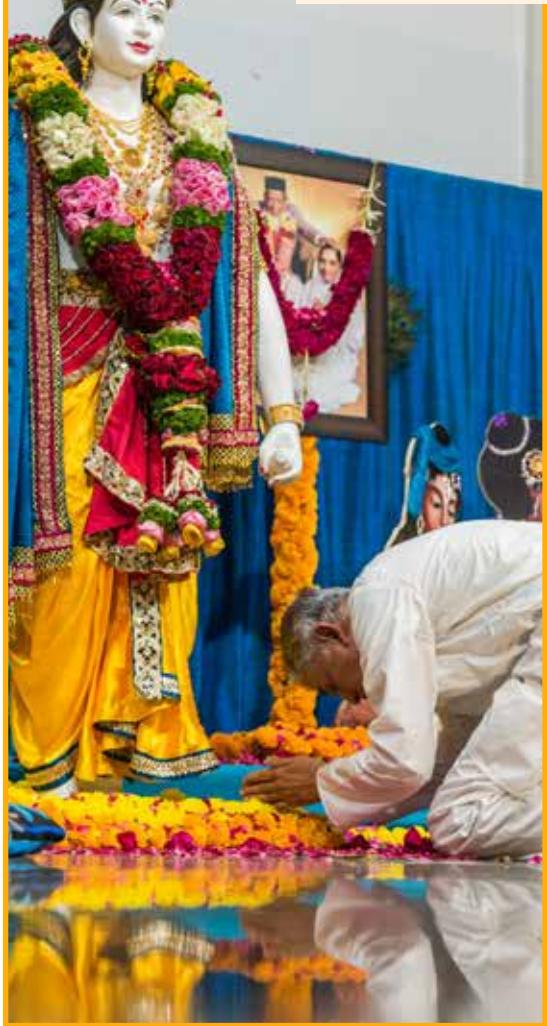
(तो दादा ने कप-प्लेट में आधा-आधा किया, आधा खुद पीया और आधा उसे दिया)

दादाश्री : हाँ, यह ले।

युवक : आप प्रेम से पिला रहे हैं इसलिए इतना पी लूँगा।

(देखा दोस्तों! जैसे लोग हमें जज करते हैं वैसे ही ज्ञानी पुरुष को भी लोग जज करते हैं। अपनी आश्वाणी पुस्तकों को ‘आफतवाणी’ कहने वाले को भी दादा ने प्रेम से दूध पिलाया! ऐसी रहती है ज्ञानियों की पॉज़िटिव दृष्टि।)

ज्ञानी आश्वर्य की प्रतिमा



‘आपकी बात सही है। आगे से मैं ध्यान रखूँगा और सभी भगवंतों का दर्शन मस्तक झुका कर करूँगा।’

2009 में जब प्रतिक्रमण ग्रंथ पर पारायण चल रहा था यह बात तब की है। एक महात्मा जो रोज़ पारायण में आते थे, उन्होंने पूज्यश्री से कहा कि, ‘पूज्यश्री, आप सीमंधर स्वामी, दादा-नीरू माँ और शासन देव-देवियों का दर्शन मस्तक झुकाकर करते हैं, जबकि पास में रखे हुए श्रीकृष्ण भगवान और शंकर भगवान को सिर्फ हाथ जोड़कर नमस्कार करते हैं और आपके इस व्यवहार के कारण जो लोग नए-नए आए हैं वे दादा के लिए गलत सोच सकते हैं।’

पूज्यश्री ने तुरंत ही अपनी गलती की माफ़ी मांगी और कहा कि, ‘आपकी बात सही है। आगे से मैं ध्यान रखूँगा और सभी भगवंतों का दर्शन मस्तक झुका कर करूँगा।

‘महात्मा ने अपनी बात प्रत्यक्ष सत्संग में कही थी इसलिए उन्हें बहुत पश्चाताप हुआ और उन्हें लगा कि इतने बड़े ज्ञानी की विराधना हो गई। उन्होंने फिर से प्रत्यक्ष सत्संग में ही पूज्यश्री से माफ़ी मांगी। पूज्यश्री ने उनसे कहा कि, ‘इसमें आपने कोई अपमान नहीं किया बल्कि अच्छा हुआ कि आपने हमें बताया। हम अपने नज़दीकी लोगों से कहते ही हैं कि यदि हमसे कोई गलती हो जाए तो बताना, ऐसे ही आपने भी गलती बताई। अपमान करने का आपका ज़रा सा भी भाव नहीं था इसलिए बोझ मत रखना और मैं भी ध्यान रखूँगा कि वापस ऐसी गलती ना करूँ।’



अक्रम पीडिया



नाम : आयुष महेता

उम्र : 21 वर्ष

आयुष : मेन्यू प्लीज़....

(हेय!! रीडर्स... आज मैं अपने कॉलेज फ्रेन्ड्स और बड़े भाई निकुंज को बर्थडे ट्रीट देन के लिए कैफे लेकर आया हूँ।)

साहिल : 2 कोल्ड कोफी, 2 मोजीठो, वन व्हाइट सोस पास्ता, 4 वेज बर्गर एन्ड वन लज़ानीया। प्लीज़!!

यह सुनकर रोहन हँसने लगा।

रोहन (हँसते हुए) : अरे! दोस्त, इट्स मोहितो, नॉट मोजिठो और लज़ान्ये, नॉट लज़ानीया!!! तू इतना भी नहीं जानता? (रोहन और जोर से हँसने लगा।)

साहिल : हाँ भई वही, वेटर समझ गया तो बहुत हो गया...

रोहन : लेकिन 'प्रनन्सीएशन' (Pronunciation) भी कोई चीज़ है न? तेरा क्या कहना है, आयुष?

आयुष : 'लिव इट मैन! जस्ट चेन्ज द टॉपिक।'

(हम सब गप-शप करने लगे और थोड़ी देर में मज़ेदार फूड आ गया।)

रोहन : सब आ गया, इसका लज़ानीया कहाँ है? वेटर, लज़ानीया.... कितनी देर लगेगी?

साहिल : बस कर... कितना चलाएगा?

रोहन : चील बो!

साहिल : माना कि मेरे प्रनन्सीएशन' (Pronunciation) में गलती थी, लेकिन मज़ाक की भी हद होती है।

रोहन : दोस्त! तेरी लैंगवेज़ में पहले से ही प्रॉब्लम है। कबूल कर ले न भाई।

साहिल : मेरी लैंगवेज़ अच्छी नहीं है, आइ अग्री। लेकिन शायद तू भूल रहा है कि फिर भी मुझे तीन साल से 'बेटर इन्टर्नशीप' मिल रही है।

आयुष : अरे बाबा बस, लज्जान्ये आ गए। अब खाने पर फोकस करते हैं, प्लीज़।

(हमने बहुत मौज़-मस्ती की, बातचीत करते हुए मज़ेदार फूड का आनंद उठाया।)

निकुंजभाई : अरे साहिल, तू घर कैसै जाएगा? मैं और आयुष तूझे ड्रॉप कर देते हैं।

आयुष : हाँ... 'कम विद् अस।'

(हम निकुंजभाई की कार में बैठ गए।)

आयुष : आज की पार्टी में तुझे मज़ा आया न?

साहिल : हाँ, बहुत मज़ा आया, लेकिन मुझे रोहन पर बहुत गुस्सा आ रहा है। सिर्फ लैंगवेज़

के बेसिस पर उसे मुझे जज नहीं करना चाहिए। कमेन्ट करने से पहले इतना तो सोचना चाहिए था कि लैंगवेज़ के अलावा मुझमें और भी कई स्किल्स हैं! भले ही उसका इंग्लिश अच्छा है, लेकिन मार्क्स तो मेरे ही ज्यादा आते हैं।

निकुंजभाई : वेट, वेट, वेट... तुम दोनों को मैं एक ऑडियो क्लीप का पार्ट सुनाना चाहता हूँ। क्या मैं प्ले कर सकता हूँ?

साहिल : ज़रुर निकुंजभाई। वैसे भी हम आपकी गाड़ी में बैठे हैं। इट्स योर चॉइस!

(हम तीनों हँसने लगे और निकुंजभाई ने ऑडियो क्लीप शुरू की।)



प्रश्नकर्ता : कोई भी व्यक्ति भूतकाल में किए गए हमारे वर्तन या आदत को याद रखे और पुरानी बात को लेकर मज़ाक उड़ाए या टोक-टोक करे, या शायद वैसा न भी करे तो भी हमें 'वाइब्रेशन' ही ऐसे नेगेटिव आते हैं कि वह मेरे बारे में गलत सोच रहा है। फिर उस व्यक्ति के प्रति भाव बिगड़ जाते हैं, तब क्या करना चाहिए? उदाहरण के तौर पर, कोई मुझसे कहे कि 'इसे तो खाते रहने की आदत पड़ चुकी है।' तो ऐसे में क्या करना चाहिए?

पूज्यश्री : तो आपके जो भाव बिगड़ जाते हैं, उसके लिए, उस व्यक्ति के प्रतिक्रमण करने चाहिए और दूसरा यह कि कोई यदि आपकी गलती निकाले, आपकी वैसी कोई आदत हो या कुछ गलती की हो, तब यदि कोई गलती बताए तो बल्कि खुश होना चाहिए कि तेरी बात सही है। मेरी प्रकृति की कमज़ोरी है, ऐसा आप स्वीकार कर लो न! रक्षण क्यों करते हो? बल्कि स्वीकार कर लोगे तो गलती खत्म हो जाएगी।

जबकि हम तो रक्षण करते हैं। और भाव बिगड़ जाते हैं... इसका क्या मतलब है? गलती का रक्षण करते हैं और सामने वाले व्यक्ति के साथ भेद रखते हैं। इसलिए हमें भाव नहीं बिगाड़ने चाहिए। अगर मुझसे कोई कहे न कि, 'आप ऐसा करते हैं', तो मैं दीपक से कहता हूँ, 'दीपक सही बात है। वह ठीक कह रहा है, हमें सुधरना चाहिए।' तो बात खत्म हो जाएगी। बल्कि उसने याद करवाया तो गलती से मुक्त होने के लिए, हम भी उसमें सहमत हैं, वह तो अच्छी बात है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन सत्संग देखते समय चाबी मिलती है, पता चलता है कि गलती सुधारने का चान्स मिला है, लेकिन बाद में वापस पहले जैसा हो जाता है।

पूज्यश्री : हाँ, जब कोई व्यक्ति आपकी गलती दिखाता है तब आपको अपनी गलती सुधारने का दूसरा चान्स मिलता है। तब गलती का रक्षण नहीं करना चाहिए, स्वीकार कर लेना चाहिए। नीरू माँ भी यही कहते हैं कि हमारी गलती हो रही हो, हमसे औरों को नुकसान हो रहा हो या कोई हमें तकलीफ़ दे रहा हो, उन सबको रोज 5-10 मिनट के लिए याद करना चाहिए, उस बात को छोड़ नहीं देना चाहिए। तो फिर धीरे-धीरे छः - बारह महीने में या दो साल में ही सही लेकिन वह गलती का अंत आएगा।

(मैं और साहिल बिल्कुल चुप हो गए।)

निकुंजभाई : आइ थिंक, मुझे ज्यादा कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है, तुम लोग समझदार हो।

साहिल : या.. आपकी बात सही है। रोहन ने मुझ पर कमेन्ट किया और मैं उस पर चिढ़ गया। मन से तो अभी भी मुझे उस पर गुस्सा आ रहा है। इससे

तो और ज्यादा नुकसान होगा। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए और जो भाव बिगाड़े, उनका प्रतिक्रमण करना चाहिए। 'लेट्स इू द प्रतिक्रमण।'

आयुष : मुझे भी एक लेसन मिला। गलियाँ स्वीकार कर लेने से उसका अंत आता है। थैंक्स!



ज्ञानी विद् यूथ

प्रश्नकर्ता : आजकल के यूथ को अगर कोई जज करता है तो वे उस बात को बहुत गंभीरता से ले लेते हैं और उन पर असर हो जाता है, तो मैं समझना चाहता हूँ कि ऐसे जजमेन्ट्स् का सामना कैसे करना चाहिए?

पूज्यश्री : कभी आईना इस्तेमाल किया है क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ, पूज्यश्री।

पूज्यश्री : आईने से आपको क्या फायदा होता है?

प्रश्नकर्ता : जैसा है वैसा दिखाता है।

पूज्यश्री : मैं जैसी हूँ वैसी दिखाई देती हूँ, सुबह उठकर क्या करती हो आप? खुद को आईने

में देखती हो, बाल बिखर गए हों तो कंधी से बाल बनाती हो, रातभर में जो बाल बिखर गए थे उन्हें एक बार कंधी लगाकर, पानी-वानी लगाने से सीधे हो जाते हैं न!! वह किसकी हेल्प से करती हो?

प्रश्नकर्ता : आईने की हेल्प से।

पूज्यश्री : बिखरे हुए बालों को ठीक करने के लिए आईने की ज़रूरत पड़ती है न? आपके पीछे कुछ लिखा हो कि 'ट्रिंकल' ज्ञाते हैं, तो आपको

तो दिखाई नहीं देता और लोग हँसते रहते हैं... तो आप कहोगी कि क्यों हँस रहे हो? पीछे लिखा है! 'ट्रिंकल' झूठी है। आपको नहीं दिखाई देता लेकिन अगर कोई दिखाए तो क्या पता चलता है कि पीछे कुछ लिखा है? यानी हमारे कचरे हमें नहीं दिखाई देते। यदि कोई हमें दिखाए तो वह उपकारी कहलाएगा न?? क्या आईने को तोड़ देना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : उपकारी कहेंगे।

पूज्यश्री : ऐसा जज करते हो? मुझे जज करते हो? यह जगत् कैसा है? आईने जैसा है। जैसा है, वैसा है, बोले बगैर नहीं रहेगा। चार दिवारों के अंदर घोटाला करोगे तो आत्मा तक फोन पहुँच जाएगा। यह कुछ घोटाला कर रही है। कोई कहेगा, यह घोटालेबाज है, गलत काम करती है।

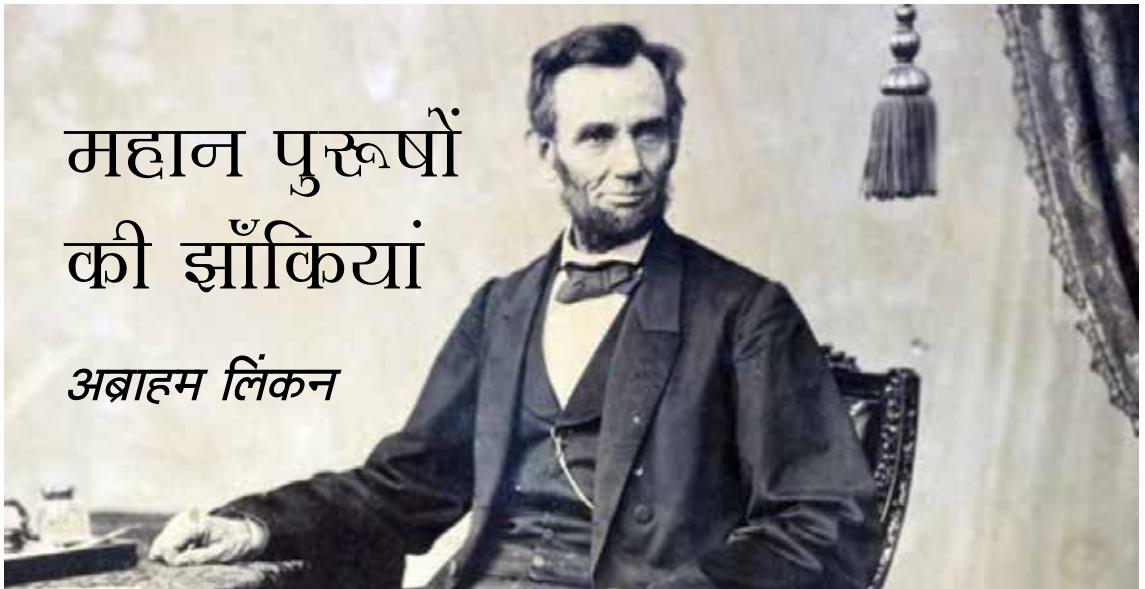
आपको लगता है कि मैं किसी को पता नहीं चलने दूँगी लिकिन लोग ऐसा क्यों बोलते हैं? अब समझ जाओ कि आईना बोल रहा है।

लोग फिर फोटो बनाते हैं.... "दर्पण झूठ नहीं बोलता", ऐसे ही हमारा फोटो हमें दिखाते हैं। ये जीवित लोग भी फोटो दिखाते हैं। मम्मी डॉटे कि, 'तु तो सभी बातें छुपाती हैं, तु मुझे कुछ नहीं बताती', तब समझ लेना चाहिए कि मम्मी सही है। मम्मी हमारा फोटो बता रही है यानी सयाने होने की ज़रूरत है।

कोई हमारे लिए जजमेन्ट दे रहा हो तो जाँच करनी चाहिए कि मेरे कचरे मुझे दिखाई नहीं दे रहे तो वे दिखा रहे हैं। वे बहुत उपकारी हैं। अपना कचरा साफ कर लूँगी तो फिर कोई कुछ कहेगा नहीं।

**यह जगत् कैसा है?
आईने जैसा है। जैसा
है, वैसा है, बोले
बगैर नहीं रहेगा।**





महान पुरुषों की झाँकियां

अब्राहम लिंकन

एक दिन अब्राहम लिंकन बहुत आश्वर्यचकित रह गए, जब सामने वाले व्यक्ति ने उनके माथे पर रिवोल्वर रखकर उन्हें मरने के लिए तैयार रहने के लिए कहा।

लिकन ने जब कारण पूछा तो उस अंजान व्यक्ति ने कहा कि, “कई सालों पहले मैंने शपथ ली थी कि अगर मैं कभी खुद से भी ज्यादा बदसूरत इंसान से मिलूँगा तो उसे वही मार डालूँगा।”

लिंकन के चेहरे से चिंता की रेखाएँ हट गईं और उन्होंने हँसकर कहा, “शूट मी, यदि मैं आपसे भी ज्यादा बदसूरत हूँ तो मुझे नहीं जीना।”

रिवोल्वर हटाकर वह भी हँसने लगा। लिंकन से कहने लगा कि, “आपको अपनी बदसूरती पर वास्तव में दुःख नहीं है?”

इसी तरह उनके निकट के लोग भी उनके बारे में कई नेगेटिव अभिप्राय देते थे, जैसे कि - “लिंकन सुकलकड़ी और पुतले जैसा बेडौल है।

झुर्रियों वाले, बिना हाव-भाव के और विचित्र चेहरे वाला है। दुर्बल और भद्दा है। कभी न देखा हो ऐसा अनगढ़, असंस्कारी और बेडौल लगता है।”

उनका शारीरिक आकार अत्यंत विचित्र होने के कारण लोग ऐसे जजमेन्ट्स देते थे। लेकिन लोगों की कमेन्ट्स के सामने उन्होंने खुद ही अपने शारीरिक आकार पर हँसी-मज़ाक करना शुरू कर दिया और लोगों को उसमें मज़ा आता था। उन्होंने इस हद तक अपना मज़ाक बनाया कि अंत में उनका मज़ाकिया आकार भी लोगों को सामान्य लगने लगा।

इससे यह पता चलता है कि कोई व्यक्ति खुद के लिए किए गए कमेन्ट्स को किस तरह से अपनी ताकत में बदलकर आगे बढ़ सकता है!

#कविता

'तू ऐसा है!' 'तू वैसा है!' ऐसा बढ़ हो गया विचार में,
स्ट्रोंग अभिप्राय वैसा, मानो बुन लिया व्यवहार में!

पैसे हो या दिखावा हो, या हो सोशियल मीडिया,
जहाँ हुए जजमेन्टल, खुद को ही हुए वे बाधक!

शंका-निंदा बढ़ाकर, खुद पर ही हुआ असर,
'गोल्स' तक पहुँच न पाए, और मोल ली आफत!

फिर समझ में आया कि जज तो भाई! सभी बनेंगे,
'तू' खुमारी मत छोड़ना, लोग तो जैसा देखेंगे वैसा ही कहेंगे।

जब किसी ने किया 'ज्ञानी' को जज, रहे वें पोजिटिव,
चाबियाँ ऐसी दी कि दिखे न एक भी नेगेटिव!

अब जाग, लगा रह तू ध्येय से, न रहे कोई कमज़ोरी खुद में,
टीकाओं का सामना करके, बदल दे उन्हें तु ताकत में!

कोई दिखाए अगर गलती खुद की, माने उसे उपकारी,
करके प्रतिक्रमण 'कु-भाव' के, बन जा संरकारी!



एडजस्टमेन्ट



हल्लो फेन्ड्स!!

आप सोच रहे होंगे कि लोग मुझे जज करना कब बंद करेंगे? इसका जवाब है, कभी नहीं। बल्कि ऐसे संयोगों में हमें एडजस्टमेन्ट करना चाहिए। चलो, एक ऐक्टिविटी समझते हैं।

सूचनाएँ

नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़कर, चेक करें कि इनमें से कौन सा वाक्य आप पर लागू होता है। उस वाक्य के सामने सही और यदि लागू न होता हो तो उसके सामने गलत लिखो।

प्लीज़, 'बी ऑनेस्ट वीद् यॉरसेल्फ'...

1) कोई आपको जज करता है तब आप उस पर गुस्सा हो जाते हो।



2) आप सोचने लगते हो कि, 'क्या अब भी लोग मुझे जज करेंगे?'



3) भले ही आप सही हों, फिर भी लोगों के जजमेन्ट के आधार पर और 'पीआर प्रेशर' के कारण खुद को बदलने का प्रयत्न करते हों।



4) आप नेगेटिव सोचने लगते हो और जो लोग आपको जज करते हैं, उनके प्रति भी नेगेटिव सोचना और जजमेन्ट्स देना शुरू कर देते हों।



5) जजमेन्ट के आधार पर आप कुछ चीजें करना छोड़ देते हों, फिर भले ही वह आपको प्रिय हो या आपके हित के लिए हो।



यदि ज्यादातर वाक्य आपके लिए सही हैं,

तो लोगों के जजमेन्ट्स से प्रभावित हुए बगैर आपको सोचने की ज़रूरत है कि क्या वास्तव में ये जजमेन्ट्स आपके लिए हैं?

जजमेन्ट्स के आधार पर किए गए बदलाव क्या आपके हित में हैं?

यदि हाँ, तो उस व्यक्ति का आभार मानो और अपनी गलती सुधारने का प्रयत्न करो।

यदि नहीं, तो उन जजमेन्ट्स की उपेक्षा करो और शांत रहकर जज करने वाले व्यक्ति के लिए प्रार्थना करो।

यदि ज्यादातर वाक्य आपके लिए गलत हैं,

तो आप पर जजमेन्ट का असर नहीं होता है।

लेकिन कुछ जजमेन्ट्स जो वास्तव में आपके हित के लिए हों, तो उनकी उपेक्षा मत करना और उस बारे में खास तौर पर सोचना।

जनवरी 2021

वर्ष : 8, अंक : 9

अखंड क्रमांक : 93

जब कोई व्यक्ति हमारी भूल बताता है तब हमें अपनी भूल सुधारने का एक और मौका मिलता है। तब हमें अपनी भूल का रक्षण नहीं करना चाहिए, उसे स्वीकार करना चाहिए।



Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.